# अर्थशास्त्र

## कक्षा– नौवीं

## अध्याय–1, पालमपुर गाँव की कहानी

**पाठ्य बिन्दु :–**

1. भारत के गांवो में कृषि – उत्पादन की प्रमुख गतिविधि है।
2. पालमपुर में कृषि ही मुख्य्य क्रिया है।
3. अन्य उत्पादन गतिविधियों में जिन्हें गैर कृषि क्रियाएँ कहा गया है 'लघु विनिर्माण, परिवहन, दुकानदारी आदि शामिल हैं।
4. उत्पादन का उद्देश्य या प्रयोजन ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ उत्पादन करना है, जिनकी हमें आवश्यकता है।
5. उत्पादन हेतु चार चीज़े आवश्यक है – भूमि, श्रम, पूंजी तथा ज्ञान एवं उद्यम।
6. उपज बढ़ाने के तरीके :–

   क) बहुविध फसल प्रणाली :– एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल उत्पन्न करने को बहुविध फसल प्रणाली कहते हैं।

   ख) आधुनिक कृषि विधि :– खेती में आधुनिक कृषि विधियों का प्रयोग जैसे, एच. वाई.वी. (HYV) बीजों, रसायनिक उर्वरक इत्यादि का प्रयोग करना। भारत में सबसे पहले पंजाब और हरियाणा एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इनका प्रयोग किया गया था।
7. हरित क्रांति द्वारा भारतीय कृषकों ने अधिक उपज वाले बीजों (HYV) के द्वारा गेहूँ और चावल की कृषि करने के तरीके सीखे।
8. अनेक क्षेत्रों में हरित क्रान्ति के कारण उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है – इसके अतिरिक्त नलकूपों से सिंचाई के कारण भौम जल स्तर कम हो गया है।
9. बिजली के विस्तार ने सिंचाई व्यवस्था में सुधार हुआ परिणाम स्वरूप किसान दोनों खरीफ़ (Kharif) और रबी ( Rubi) दोनों ऋतुओं की फसल उगाने में सफल हो सके हैं।
10. क) भौतिक पूंजी – उत्पादन के हर स्तर पर अपेक्षित कई तरह की आगत जैसे– कच्चा माल, नकद मुद्रा औजार मशीन, भवन इत्यादि।

ख) स्थायी पूंजी – औज़ारों, मशीनों, भवनों का उत्पादन में कई वर्षो तक इस्तेमाल होता है इन्हें स्थायी पूंजी कहा जाता है।

ग) मानव पूंजी – उत्पादन करने के लिए भूमि, श्रम और भौतिक पूंजी को एक साथ करने योग्य बनाने के लिये ज्ञान और उद्यम की जरूरत पड़ती है जिसे मानव पूंजी कहा जाता है।

**एक नज़र में पालमपुर :–**

1. पालमपुर में कृषि ही प्रमुख उत्पादन प्रक्रिया है। गाँव में 450 परिवार रहते है। 150 परिवारों के पास, खेती के लिए भूमि नहीं है। बाकी 240 परिवारों के पास 2 हेक्टेयर से कम क्षेत्रफल वाले छोटे भूमि के टुकड़े हैं। गांव की कुल जनसंख्या का एक–तिहाई भाग दलित या अनुसूचित जातियों का है। गाँव में ज़्यादातर भूमि के स्वामी उच्च जाति के 80 परिवार है।

2. पालम पुर गांव में शिक्षा के लिए – एक हाई स्कूल दो प्राथमिक विद्यालय, एक स्वास्थ्य केन्द्र और एक निजी अस्पताल भी है।

3. गांव के कुल कृषि क्षेत्र के केवल 40 प्रतिशत भाग में सिंचाई होती है। अधिक उपज पैदा करने वाले बीज (HYV) की सहायता से गेहूँ की उपज 1300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 3200 किलोग्राम हो गई है।

4. पालम पुर गांव में 25 प्रतिशत लोग गैर कृषि–कार्यो में लगे हुए हैं जैसे – डेयरी – दुकानदारी, लघुस्तरीय निर्माण, उद्योग, परिवहन इत्यादि।

5. पालमपुर व आस पड़ोस के गाँवों, कस्बों और शहरों में दूध, गुड़, गेहुँ आदि सुलभ हैं। जैसे–जैसे ज्यादा गाँव, कस्बों और शहरों से अच्छी सड़को, परिवहन और टेलीफोन से जुड़ेंगें, भविष्य में गाँवों में गैर–कृषि उत्पादन क्रियाओं के नये अवसर सृजित होगें।

**1 अंक वाले प्रश्न :–**

1. पालमपुर गांव के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या है।?
2. उत्पादन का प्रयोजन / उद्देश्य क्या है?
3. उत्पादन की प्रथम आवश्यकता क्या है?
4. पालमपुर गांव में बरसात के मौसम में लोग क्या उगाते हैं?
5. आधुनिक कृषि विधि में कौन से बीजो का इस्तेमाल किया जाता है?
6. एक साल में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल उगाने को क्या कहते हैं?
7. कृषि के आधुनिक तरीकों का सबसे पहले प्रयोग भारत में किन दो राज्यों में किया गया था?

8. छोटे किसान खेती के लिए आवश्यक पूँजी कहाँ से लेते हैं?
9. पालम पुर में गैर कृषि क्रियाएँ कौन सी हैं?
10. मिश्री लाल की आय का क्या साधन हैं?
11. करीम का क्या पेशा है?
12. छोटे किसान से क्या तात्पर्य है?
13. पालमपुर में लगभग कितने प्रतिशत लोग गैर कृषि व्यवसायों में लगे हुए हैं?
14. भूमि मापने की मानक इकाई क्या है?
15. अधिशेष कृषि उत्पादों का किसान क्या करते हैं?

**लघु / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (3 / 5 अंक)**

1. पालमपुर में कौन–कौन सी फसलें उगायी जाती हैं?
2. पालमपुर गाँव की किन्हीं तीन गैर–कृषि क्रियाओं का वर्णन कीजिए?
3. 1960 के दशक के अन्त में आई हरित क्रान्ति ने भारतीय कृषि पर क्या प्रभाव डाला? (कोई तीन बिंदू)
4. परम्परागत खेती व आधुनिक कृषि में अन्तर स्पष्ट कीजिए (कोई तीन)।
5. श्रमिक या छोटे किसान पूंजी की व्यवस्था कैसे करते हैं?
6. पालमपुर में लघुस्तरीय विनिर्माण उद्योग की विशेषताएँ लिखिए (कोई तीन)
7. आपके क्षेत्र में कौन–कौन सी गैर कृषि क्रियाएँ होती है? (किन्हीं तीन)
8. बहुविध फसल प्रणाली व आधुनिक फसल प्रणाली एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न है? (कोई तीन बिन्दू)।
9. स्थायी पूंजी से क्या अभिप्राय है?
10. पालम पुर गांव में भूमिहीन किसानों को किस प्रकार का संघर्ष करना पड़ रहा हैं?
11. वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए आवश्यक चीज़ों का वर्णन कीजिए?
12. ''कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए सिंचित क्षेत्र को बढ़ाना आवश्यक है'' कोई तीन कारण लिखिए।
13. भारत में सिचाई व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।?
14. पालमपुर में भूमि कृषको में किसी प्रकार वितरित है?

15. पालमपुर के दुकानदार किस प्रकार व्यापार करते हैं?

16. ''हरित क्रान्ति'' के कारण मिट्टी की उर्वरक क्षमता कम हुई है'', क्या आप इससे सहमत हैं। अपने विचार व्यक्त कीजिए।

17. ऐसे कौन–कौन से गैर–कृषि कार्य हैं जो पालमपुर जैसे गाँवों के प्रारम्भ किये जा सकते हैं।

**1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर :–**

1. कृषि
2. ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ उत्पादित करना है जिनकी हमें आवश्यकता है।
3. भूमि।
4. ज्वार और बाजरा।
5. HYV
6. बहुविध फसल प्रणाली
7. पंजाब और हरियाणा
8. बड़े, किसानों से या गाँव के साहूकारों से आवश्यक पूंजी लेते हैं।
9. डेयरी, लघुस्तरीय विनिर्माण, दुकानदारी, परिवहन, तागें वाले तथा जीप वाले।
10. लाल गन्ना पेरकर गुड़ बनाना।
11. करीम ने अपने गाँव में एक कम्प्यूटर केन्द्र खोल रखा है।
12. जिन किसानों के पास दो हेक्टेयर से कम भूमि है।
13. लगभग 25 प्रतिशत
14. एक हेक्टेयर, जो 100 मी. वाली भुजा वाले वर्ग के क्षेत्रफल के बराबर है।
15. अधिशेष कृषि उत्पादों को रायगंज के बाजार में बेचा जाता है।

**लघु/दीर्घ प्रश्नों के उत्तर (3/5 अंक)**

1. i) खरीफ : ज्वार बाजरा, पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग करने के लिए।
   ii) अक्टूबर और दिसंबर के बीच – आलू की खेती।
   iii) रबी (सर्दी में) – गेहूँ
   iv) भूमि के एक भाग में गन्ने की खेती होती है। (कोई तीन)

2. i) लघु स्तरीय विनिर्माण
   ii) डेयरी
   iii) परिवहन
   iv) दुकानदारी (कोई भी तीन)

3. i) हरित क्रान्ति ने भारतीय कृषकों को ज्यादा उपज वाले बीज HYV के द्वारा चावल और गेहूँ की कृषि करने के तरीके सिखाये।
   ii) परम्परागत बीजों की तुलना में HYV अधिक उपज वाले बीज सिद्ध हुए।
   iii) किसानों ने कृषि में ट्रेक्टर और फसल काटने की मशीनों का उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

4.

| **परम्परागत कृषि** | **आधुनिक कृषि** |
|---|---|
| i) कृषि में पारम्परिक बीजो का प्रयोग | i) कृषि में अधिक उपज देने वाले बीज HYV का प्रयोग |
| ii) कम सिचांई की आवश्यकता | ii) अधिक सिंचाई की आवश्यकता |
| iii) उर्वरको के रूप में गाय के गोबर अथवा दूसरी प्राकृतिक खाद का प्रयोग | iii) रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग। |

5. i) बड़े किसानों या साहुकारों से ऋण लेकर।
   ii) व्यापारियों से कर्ज़ लेकर
   iii) खेतिहर श्रमिकों के तौर पर काम करके।

6. i) सरल उत्पादन विधियों का इस्तेमाल।
   ii) पारिवारिक श्रम द्वारा घरों पर काम करना।
   iii) श्रमिकों को भी कई बार किराए पर रखा जाता है।

7. i) दुकानदारी
   ii) परिवहन संबंधित कार्य जैसे ई.रिक्शा, ट्रक का उपयोग आदि।
   iii) सिलाई, कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र तथा निजी पाठशालाएँ।
   iv) कम्प्यूटर का प्रशिक्षण देना। (या कोई अन्य)

8. **बहुविध फसल प्रणाली :–** **आधुनिक कृषि प्रणाली :–**

| बहुविध फसल प्रणाली | आधुनिक कृषि प्रणाली |
|---|---|
| i) एक साल में किसी भूमि पर एक से ज्यादा फसल उत्पन्न करने को बहुविध फसल प्रणाली कहते हैं। | i) आधुनिक वैज्ञानिक तरीके अपनाकर किसानो ने अपनी उपज बढ़ा ली है। |
| ii) बिजली के कारण सिंचाई व्यवस्था ठीक हुई है जिससे किसानों को बहुत लाभ हुआ है। | ii) HYV अधिक उपज वाले बीज व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग। |
| iii) किसान दोनों खरीफ़ व रबी ऋतुओं की फसल उगाने में सफल हुए हैं। | iii) आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर हरित क्रान्ति का जन्म तथा कई गुणा अधिक उपज की प्राप्ति। |

9. स्थायी पूंजी से अभिप्राय औज़ारों और मशीनों में अत्यन्त साधारण उपकरणों से है – जिनका प्रयोग उत्पादन में कई वर्षो तक किया जा सकता है। जैसे किसान का हल से लेकर परिष्कृत मशीनों के अन्तर्गत, जेनरेटर, कम्प्यूटर आदि।

10. i) भूमिहीन किसानों दैनिक मज़दूरी पर काम करने के लिये मजबूर हैं।

ii) उन्हें अपने लिए प्रतिदिन काम ढूंढते रहना पड़ रहा है।

iii) सरकार द्वारा मज़दूर की दैनिक दिहाड़ी न्यूनतम रूप में 60 रू0 निर्धारित की गई है। परन्तु केवल मात्र 35–40 रूपये ही मिलते है।

iv) खेतिहर श्रमिकों में अधिक स्पर्धा के कारण ये लोग कम वेतन में भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

11. i) पहली आवश्यकता है भूमि तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन जैसे जल, वन खनिज की भी आवश्यकता है।

ii) श्रम : अर्थात् जो लोग काम करेगें। कुछ उत्पादन क्रियाओं में शिक्षित कर्मियों की भी आवश्यकता है।

iii) भौतिक पूंजी : उत्पादन के समय प्रत्येक स्तर पर काम आने वाली आगतें जैसे इमारतें, मशीनें औजार आदि। इसमें स्थायी और कार्यशील पूंजी दोनों शामिल हैं।

iv) मानव पूंजी : उत्पादन करने के लिये – भूमि श्रम और भौतिक पूंजी को एक साथ करने योग्य बनाने के लिये ज्ञान और उद्यम की आवश्यकता है जिसे मानव पूंजी कहा जाता है।

v) बाजार : उत्पादित वस्तुओं के अन्तिम उपभोग हेतु प्रतिस्पर्धा के लिये बाजार भी एक आवश्यकत तत्व है।

12. सिंचित क्षेत्र के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाना :–

i) कृषि की व्यवस्था सिंचित क्षेत्र पर निर्भर करती है।

ii) सिंचित क्षेत्र का अर्थ है अधिक उत्पादकता, अधिक आय।

iii) भारत के कुछ क्षेत्रों में (जैसे– पंजाब, राजस्थान, दक्कनी भाग तथा मध्य भारत) वर्षा अनियमित व अनिश्चित है। ऐसे क्षेत्रों में कृत्रिम सिंचाई की अधिक आवश्यकता है।

iv) कुछ फसलें ऐसी हैं जिसके लिये नियमित रूप से जलापूर्ति आवश्यक है जैसे– चावल, गेहूँ, गन्ना आदि।

v) जिन क्षेत्रों में आधुनिक बीजों का प्रयोग किया जाता हे वहां की जल की अधिक आवश्यकता पाई जाती है। (या कोई अन्य)

13. भारत में सिंचाई व्यवस्था की व्याख्या :–

i) भारत के सभी गाँव में उच्च स्तर की सिचाई व्यवस्था नहीं है। आज भी कुल कृषि क्षेत्र के 40 प्रतिशत से भी कम क्षेत्र में ही सिंचाई होती है।

ii) परम्परागत विधि में किसान कुओं और रहट द्वारा पानी निकालकर छोटे–छोटे खेतों की सिंचाई करते थे।

iii) बिजली आ जाने से सिंचाई की सुविधा बढ़ गई और सिंचाई पद्धति बढ़ गई।

iv) बिजली से चलने वाले नल कुपों से ज्यादा प्रभावकारी ढंग से अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जाती है।

v) नदीय मैदानों के अतिरिक्त हमारे देश में तटीय क्षेत्रों में अच्छी सिंचाई होती है।

14. पालमपुर में भूमि का वितरण :–

i) पालमपुर में 450 परिवारों में से लगभग एक तिहाई अर्थात् 150 परिवारों के पास खेती के लिये भूमि नहीं है जो अधिकाशतः दलित है।

ii) 240 परिवारों जिनके पास भूमि नहीं है 2 हेक्टेयर से भी कम क्षेत्रफल वाले टुकड़ों पर खेती करते हैं।

iii) भूमि के ऐसे टुकड़ों पर खेती करने से किसानों के परिवार को पर्याप्त आमदनी नहीं होती।

iv) पालमपुर में मझोले किसान और बड़े किसानों के 60 परिवार हैं जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करते है।

v) कुछ बड़े किसानों के पास 10 हेक्टेयर या इससे अधिक भूमि है।

15. पालमपुर के दुकानदार :–

i) दुकान पर प्रतिदिन की वस्तुओं को थोक रेट पर खरीदते है और गाँव में बेचते है।

ii) पालमपुर में ज्यादा लोग व्यापार (वस्तु विनियम) नहीं करते।

iii) गाँव में छोटे जनरल स्टोरो में चावल, गेहूँ, चाय, तेल, बिस्कुट, साबुन, टूथ पेस्ट, बेट्री, मोमबत्ती, कापियां पैन पेन्सिल तथा कुछ कपड़े भी बेचते हैं।

iv) कुछ परिवारों ने जिनके घर बस स्टैंड के निकट होते है अपने घर के एक भाग में ही छोटी दुकान खोल ली है।

v) वस्तुओं के साथ–साथ खाने की चीज़े भी बेचते हैं।

16. हरित क्रान्ति :–

i) रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण मृदा की उर्वरता नष्ट होने लगी।

ii) भू–जल के अति प्रयोग से भौमजल स्तर गिरने लगा।

iii) रासायनिक उवर्रक आसानी से पानी में घुलकर मिट्टी से नीचे चले जाते हैं और जल को दुषित करते हैं।

iv) ये बैक्टीरिया और सूक्ष्म जीवाणु नष्ट कर देते हैं जो मिट्टी के लिए उपयोगी हैं।

v) उर्वरकों के अति प्रयोग से भूमि खेती के योग्य नहीं रहती ।

17. पालमपुर में गैर कृषि कार्य प्रारम्भ किए जा सकते हैं :–

i) लकड़ी से फर्नीचर बनाना

ii) घरेलु बर्तनो का निर्माण

iii) सिलाई, कढ़ाई, बुनाई से तैयार कपड़े

iv) टोकरियाँ बुनना

v) ईटें बनाना

vi) सिलाई कढ़ाई केन्द्र खोलना।

## अध्ययन सामग्री :–

1.

**आरेख 1.1 : कृषकों और कृषि क्षेत्र का वितरण**

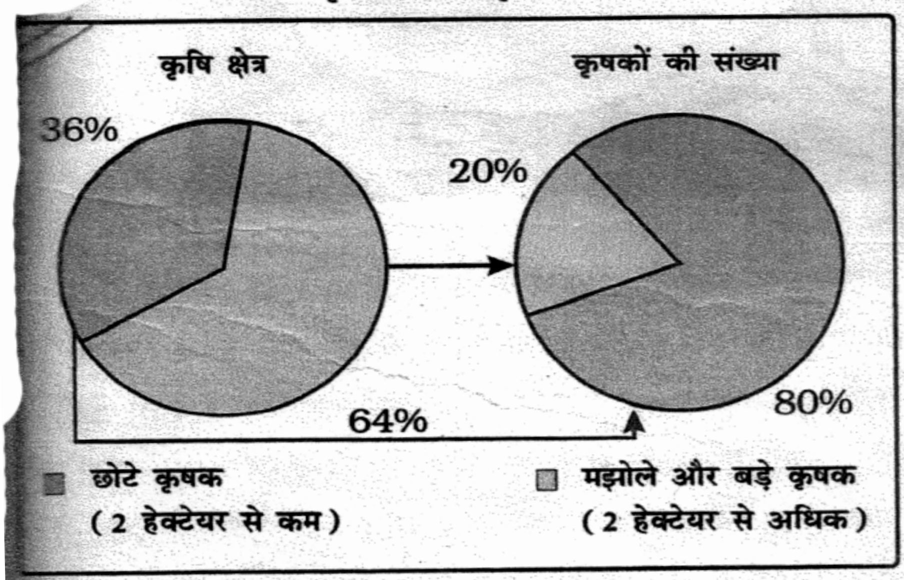


स्रोत : एग्रीकल्चर स्टेटिसटिक्स एट ए ग्लांस 2003, डिपार्टमेंट आफ़ एग्रीकल्चर एंड कॉर्पोरेशन, मिनिस्ट्री आफ़ एग्रीकल्चर, गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया

## अध्ययन सामग्री :—

2.

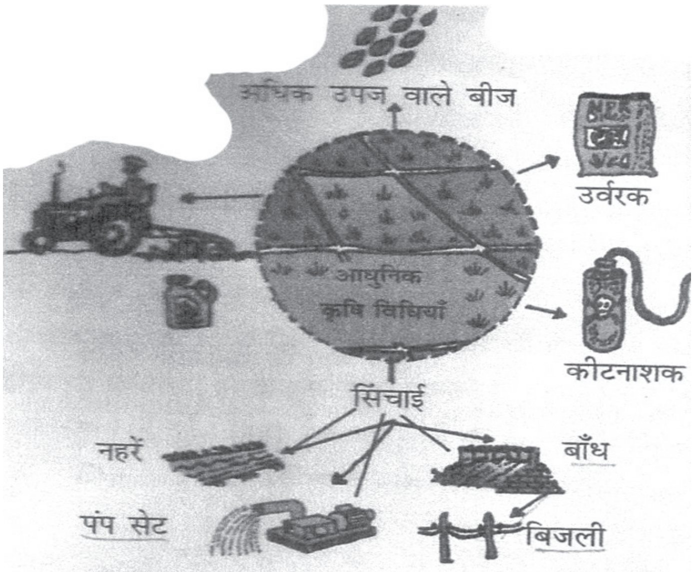


3. **चित्र 1.4 :** आधुनिक कृषि के तरीके : एच.वाई.वी. बीज, रासायनिक उर्वरक आदि

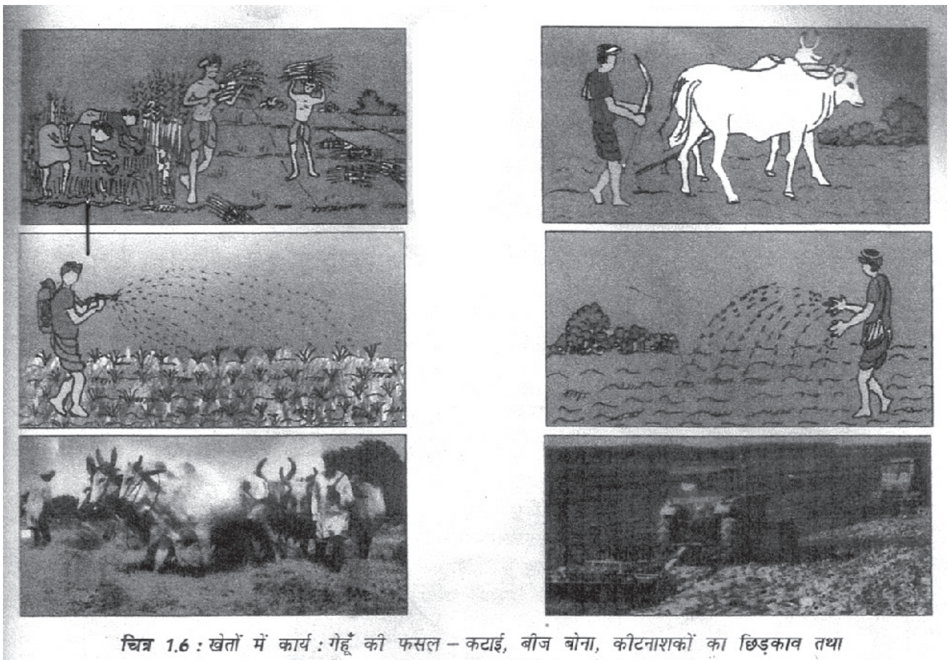

**चित्र 1.6 :** खेतों में कार्य : गेहूँ की फसल – कटाई, बीज बोना, कीटनाशकों का छिड़काव तथा आधुनिक एवं परंपरागत विधियों से फसलों की जुताई